कितना अंतर है, प्रिय, तुझमें और मुझमें...

- रविशंकर श्रीवास्तव / आर. के. पाण्डे

प्रिये, मैं और तुम आज कंधे से कंधा मिलाकर बिना किसी जेंडर बायस के हर क्षेत्र में हम साथ साथ हैं और हमारे बीच की भिन्नता प्रायः खत्म हो रही है. परंतु सदियों से चले आ रहे इवाल्यूशन सिद्धांतों पर थोड़ा गौर करें, तो पाते हैं कि अंतर तो है बहुत... और यदि इसे जानें - समझें - स्वीकारें तो हमारा और हमारे समाज का थोड़ा होगा भला...

विभिन्न शोधों से यह सिद्ध हो चुका है कि आदतन...

- पुरूष टीवी के अलग अलग चेनल बदल कर खुश होते हैं। महिलाएं एक ही चेनल शांतिपूर्वक देखना पसंद करती हैं।
- पुरूष शराब जैसी तीखी चीजें पसंद करते हैं, युद्ध करने में उन्हें आनंद आता है। इसके विपरीत महिलाएं मीठे पदार्थ पसंद करती हैं एवं खरीदारी में उन्हें आनंद आता है।
- महिलाएं जानती हैं कि वे कितने समझदार हैं, जबकि पुरूष सिर्फ सोचते हैं कि वे बहुत समझदार हैं।
- पुरूषों के मष्तिष्क सुप्तावस्था में 70 प्रतिशत विद्युतीय गतिविधियां बन्द रहती हैं। जबकि महिलाओं के मामले में केवल 10 प्रतिशत विद्युतीय गतिविधियां बन्द रहती हैं।
- महिलाओं में दाएं बाएं उ्पर नीचे देखने की क्षमता ज्यादा होती है और कुछ मामलों में तो यह 180 कोण तक होती है। पुरूष सिर्फ सीधे दूरबीन की तरह देख पाते हैं।
- महिलाओं की दृष्टि अंधेरे में भी देख पाने में सक्षम होती है। पुरूष अधिक दूर की चीजें देख पाने में सक्षम होते हैं।

- कम समय में ही महिलाएं किसी नए स्थान पर भी कमरे में उपस्थित स्त्री पुरूषों के आपसी संबंधों के बारे में जान लेती हैं।

- पुरूषों को महिलाओं के सामने झूठ बोलने में कठिनाई होती है।

- महिलाओं की सुनने की क्षमता पुरूषों से अधिक होती है। वे एक ही समय में फोन भी सुन सकती हैं, किसी को कुछ बता भी सकती हैं, और अपने हाथों से कढाई का कार्य भी जारी रख सकती हैं। जबकि पुरूष फोन उठाते ही यह चाहता है कि सभी खामोश हो जाएं।

- महिलाओं में यह क्षमता होती है कि वे सामने वाले व्यक्ति के अंतर्मन की बातें बगैर कहे सुने जान लेती हैं।

- पुरूष पशुओ की भाषा समझने में चतुर होते हैं।

- पुरूषों का मष्तिष्क देखकर या सुनकर विवरण जानने में सक्षम नही होता है।

- पुरूषों का मष्तिष्क जानकारियों का भंडारण व फाइलिंग मष्तिष्क में करने में सक्षम होता है। महिलाओं का मष्तिष्क समस्याओं का छुटकारा लगातार बोलकर करती हैं। पुरूष समस्या आने पर चुप रहते हैं।

- महिलाएं वस्तुओं का चुनाव करते समय पुरूषों की सलाह नहीं चाहती हैं, वे बस उनकी सहमति चाहती हैं।

- महिलाओं को दिनभर में सम्प्रेषण के लिए करीब 20000 हजार शब्द चाहिए जबकि पुरूंषों को केवल 7000 शब्द चाहिए । दिन के अन्त में महिलाएं अपने कोटे के शब्दों को बोलकर पूरा करने में संतुष्ट हो पाती हैं। इस समय उन्हें चर्चा या राय नहीं चाहिए होता है, वे बस चाहती हैं कि उन्हें बोलने दिया जाए।

- क्रोध में भविष्य की चिंता किये बिना महिलाएं बोलने लगती हैं, और पुरूष आक्रमण करते हैं। परिणाम स्वरूप 90 प्रतिशत अपराधी पुरूष होते हैं।

- पुरूष दृष्टि के द्वारा गोलाकार आकार, उभार व उत्तेजक चित्रों से प्रभावित होते हैं, जबकि महिलाओं को मीठे शब्द, प्रशंसा आदि प्रभावित करती हैं।

- महिलाओं में प्रेम के आवेग प्राकृतिक पुनरूत्पादन के आधार पर आते हैं, जबकि पुरूषों में ये स्थायी होते हैं।

- महिलाओं में प्रेम के आवेगों पहचानने की क्षमता होती है। वे प्रेम के उतार चढाव को जान लेती हैं ।

- महिलाओं में यौन व प्रेम मष्तिष्क से सम्बन्धित रहता है जबकि पुरूषों में शरीर से।

- महिला व पुरूषों में यदि समान स्वभाव हो तो वे सम्बन्ध नीरस हो जाते हैं, जबकि विपरीत स्वभाव सम्बन्धों को स्थाई व रोचक बनाता है।

- हमारी सभी भावनाएं प्रेम, दुख, प्रसन्नता आदि सभी स्नायु तंत्र के बायोकेमिकल व्यवहार पर आधारित होते हैं। जिन्हें औषधियों द्वारा बदला जा सकता है।

देखा ना प्रिये... कितना अंतर है... यही नहीं इनके अलावा और भी ढेरों भिन्नताएं हैं मुझमें और तुझमें .... तो अबकी, टीवी के सामने बैठकर, तुम्हारी गपशप को सुना-अनसुना, हॉं-हूं करता हुआ मैं अगर चैनल सर्फिंग करूं और तुम्हारी सास बहू की सोप ऑपेरा और मेरी फैशन टीवी में व्यवधान आए तो उचित यही है यह समझ लेना कि हम बने ही ऐसे हैं... भिन्नताएं लिए हुए.

* संदर्भः एलन और बारबरा पीस की पुस्तक 'व्हाई मेन लाई एण्ड वूमन क्राई'

raviratlami@mantrafreenet.com

रविशंकर श्रीवास्तव,
100, सुकृति, राजीव (कस्तूरबा) नगर,
रतलाम म. प्र. 457001